Logic

तर्कशास्त्र क्या है?

तर्कशास्त्र को सही अनुमान के सिद्धान्तों या नियमों का व्यवस्थापक विज्ञान कहा जाता है। विज्ञान इसे इसलिए कहते हैं कि इसमें अनुमान संबंधी बातों का एक व्यवस्थित ढंग से अध्ययन किया जाता है। अनुमान का अर्थ है। बाद में ज्ञान अर्थात जब किसी ज्ञान के आधार पर उसी से किसी अन्य बात का ज्ञान होता है तब वह अनुमान के द्वारा ज्ञान कहा जाता है। दूर से धुआँ को देखकर वहाँ आग होने का बोध होता है। धुआँ का ज्ञान प्रत्यक्ष अर्थात देखकर हुआ पर अग्नि का उसी के आधार पर। अग्नि का ज्ञान अनुमानजन्य है।

अतः तर्कशास्त्र का विषय है- अनुमान। इसमें हम अनुमान के विषय में अध्ययन करते हैं।

तर्कशास्त्र की परिभाषा

→ तर्कशास्त्र अंग्रेजी भाषा के Logic शब्द का पर्याय है। Logic शब्द यूनानी भाषा के Logos लोगस शब्द से लिया गया है जिसका तात्पर्य विचार अथवा शब्द से है जो कि विचार को प्रकट करता है। इस प्रकार व्युत्पत्ति की दृष्टि से तर्कशास्त्र भाषा में अभिव्यक्त विचारों का विज्ञान है। विचार मन की एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा ज्ञान प्राप्त होता है। तर्कशास्त्र में उन नियमों की खोज की जाती है। जिनके आधार पर विचार की प्रक्रिया चलती है।

यदि तर्कशास्त्र शब्द को लिया जाये तो उसकी परिभाषा तर्क के शास्त्र अथवा विज्ञान से की जा सकती है। तर्क चिन्तन की सबसे ऊँची अवस्था है। इसमें किसी उपस्थित समस्या

को सुलझाने का प्रयास किया जाता है।
जान ड्यूई तर्क को विवेकयुक्त चिंतन कहता है।
तर्क करने में सबसे पहले किसी कठिनाई का अनुभव होता है। फिर इस कठिनाई की स्थापना और परिभाषा की जाती है। अब सूचनाओं को ढूंढना, मूल्यांकन करना, संगठित करना और प्रदत्तों का वर्गीकरण करना होता है। इसके बाद परिकल्पना का मूल्यांकन किया जाता है, तब हल को लागू किया जाता है।

तर्क के दो रूप

तर्क की प्रक्रिया दो रूपों में चलती है, सामान्य से विशेष और विशेष से सामान्य की ओर। इन दोनों ही परिस्थितियों में कुछ ज्ञात बातों के आधार पर अज्ञात बातों पर पहुँचने का प्रयास किया जाता है।
उदाहरण के लिए हम अपने अनुभव में आने वाले अनेक व्यक्तियों के बारे में यह देखते हैं कि उनकी मृत्यु अवश्य होती है तो इन अनुभवों के आधार पर हम यह अज्ञात सामान्य निष्कर्ष निकाल लेते हैं कि सभी मनुष्य मरणशील हैं।

राम, मोहन, सोहन इत्यादि मरणशील हैं।
ये सब मनुष्य हैं
∴ सब मनुष्य मरणशील हैं।

अब सामान्य निष्कर्ष के आधार पर विशेष परिस्थितियों के अज्ञात बातों का पता लगाया जा सकता है। उदाहरण के लिए जब सब मनुष्य मरणशील हैं और कृष्ण एक मनुष्य है तो कृष्ण भी अवश्य मरणशील होगा। सामान्य के आधार पर विशेष अज्ञात ज्ञान पर पहुँचने

की प्रक्रिया को तर्कशास्त्र की दृष्टि से निम्नलिखित तीन सोपानों में रखा जा सकता है —

सब मनुष्य मरणशील हैं।
कृष्णा मनुष्य है।
∴ कृष्णा मरणशील है।

उपरोक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि तर्कशास्त्र में विशेष तथ्यों से सामान्य नियम और सामान्य नियम से विशेष तथ्य निकाले जाते हैं।
पहली प्रकार की प्रक्रिया 'आगमन' Induction
दूसरी प्रकार की प्रक्रिया 'निगमन' Deduction कहलाता है।
इस प्रकार तर्कशास्त्र के क्षेत्र को आगमन और निगमन दो बड़े वर्गों में बाँट दिया गया है।

→ तर्कशास्त्र वह विज्ञान है जो उन नियामक नियमों को बतलाता है जिनका पालन करके सही विचार पर पहुँचा जा सकता है। विचार की सत्यता आकार विषयक (formal) (जब हमारे विचारों में परस्पर संवाद हो तब उसे आकारित सत्यता कहा जाता है। यह संभव है कि उन विचारों के अनुकूल कोई यथार्थ घटना नहीं हो, जैसे सोने का पहाड़। ऐसा विचार किया जा सकता है फले ही इसके अनुकूल बाह्य जगत में कोई वस्तु नहीं है।) भी हो सकती है और द्रव्य विषयक वस्तुगत Material (जब विचारों का बाह्य जगत से संवाद हो तब उसमें वस्तुगत सत्यता है, जैसे "कलम लाल है" यदि ऐसा विचार हो और यथार्थ वस्तु भी वैसी ही हो तो विचार और वस्तु में अनुकूलता है। यह द्रव्य विषयक/वस्तुगत सत्यता है) भी हो सकती है। ये दोनों ही तर्कशास्त्र के विषय हैं।

P.

Date: / / Page no:

है मिल, मैन्सेल और थामसन इत्यादि तर्कशास्त्री तर्कशास्त्र को केवल आकार विषयक नियमों का विज्ञान मानते है।

→ तर्कशास्त्र की परिभाषा को लेकर एक अन्य विवाद उसको विज्ञान अथवा कला मानने के रूप मे उपस्थित हुआ है।

आल्ड्रिच Aldrich के शब्दों में, "तर्कशास्त्र तर्क की कला है।"

Logic is the art of Reasoning.

थामसन Thomson, "तर्कशास्त्र विचार के नियमों का विज्ञान है।"

Logic is the science of the law of thought.

व्हेटली Whately, "तर्कशास्त्र तर्क का विज्ञान और कला है"

Logic is the science and also the art of reasoning.

आल्ड्रिच और थामसन की परिभाषा की तुलना में व्हेटली द्वारा दी गयी परिभाषा अधिक उपयुक्त है। वास्तव में तर्कशास्त्र विज्ञान और कला दोनों ही है। उसका एक पहलू सैद्धान्तिक (Theoretical) है दूसरा व्यवहारिक (Applied) है। यह विज्ञानों का विज्ञान और कलाओं की कला है।

→ तर्कशास्त्र की सबसे उपयुक्त परिभाषा Mill मिल के शब्दों में की जा सकती है

मिल के अनुसार, "तर्कशास्त्र बुद्धि की उन क्रियाओं का विज्ञान है जो प्रमाण के मूल्यांकन में उपयोगी है और यह

ज्ञात तथ्यों से अज्ञात तथ्यों पर पहुँचने की प्रक्रिया तथा उसमें सहायता देने वाली सभी अन्य बौद्धिक क्रियाओं का विचार करता है।"

तर्कशास्त्र की इस परिभाषा में निम्नलिखित बातें उल्लेखनीय है –

1. तर्कशास्त्र प्रमाण के मूल्यांकन में उपयोगी है।

तर्कशास्त्र को बुद्धि की क्रियाओं के विज्ञान के साथ साथ प्रमाण के मूल्यांकन में उपयोगी मान लेने से मिल उसके सैद्धान्तिक और व्यावहारिक दोनों पहलुओं पर जोर देता है।

दूसरे शब्दों में वह तर्कशास्त्र को विज्ञान और कला दोनों ही मानता है।

2. तर्कशास्त्र ज्ञात से अज्ञात तथ्यों पर पहुँचने की प्रक्रिया पर विचार करता है –

तर्कशास्त्र में आगमन और निगमन के आधार पर ज्ञात से अज्ञात पर पहुँचने का प्रयास किया जाता है। मिल की इस परिभाषा में तर्कशास्त्र के आगमन और निगमन दोनों ही क्षेत्रों पर जोर दिया गया है।

3. तर्कशास्त्र आगमन और निगमन में सहायता करने वाली सभी अन्य बौद्धिक क्रियाओं पर विचार करता है

निगमन के क्षेत्र में तर्कशास्त्र के मूल नियम, पद वाच्य धर्म, परिभाषा, तार्किक विभाजन, तर्कवाक्य, वाक्यों का विरोध, अनुमान, न्याय वाक्य इत्यादि सम्मिलित है।

आगमन क्षेत्र में परिकल्पना, प्रायोगिक विधियाँ, सादृश्य से अनुमान, प्रकृति के नियम, व्याख्या और उसकी सीमाएँ, परिभाषा, वर्गीकरण इत्यादि। तर्कशास्त्र में इन सभी बौद्धिक क्रियाओं पर विचार किया जाता है।

इस प्रकार तर्कशास्त्र की मिल द्वारा दी गई परिभाषा सर्वांगीण पूर्ण परिभाषा मानी जा सकती है।

Nature of Logic

तर्कशास्त्र का स्वरूप

किसी विषय का स्वरूप बतलाने का अर्थ है यह बतलाना कि वह विज्ञान है या कला या दोनों?

विज्ञान - सुव्यवस्थित अध्ययन को विज्ञान कहते हैं।

विज्ञान की विशेषताएँ -

1. प्रत्येक विज्ञान का अपना-अपना विषय होता है जैसे भौतिकी का भौतिक पदार्थ का, मनोविज्ञान मानसिक प्रक्रियाएं आदि। जबकि साधारण ज्ञान किसी खास वस्तु से संबंधित नहीं होता।
2. विज्ञान में सामान्य ज्ञान होता है। विज्ञानों का लक्ष्य है, साधारण विज्ञानों की स्थापना।
3. विज्ञान में निरीक्षण, प्रयोग, वर्गीकरण आदि की सहायता ली जाती है।
4. विज्ञान द्वारा प्राप्त ज्ञान निश्चित तथा यथार्थ होता है। विज्ञान कार्य-कारण संबंध पर आश्रित रहता है।
5. विज्ञान द्वारा प्राप्त ज्ञान सुव्यवस्थित होता है।
6. विज्ञान हमें केवल वस्तुओं की प्रकृति का ज्ञान देता है। वह कुछ करने के लिए नहीं सिखाता है।

तर्कशास्त्र भी एक विज्ञान है। तर्कशास्त्र सभी विज्ञानों की भाँति विश्व के एक विभाग का अध्ययन करता है - अनुमान का। यह सही अनुमान के व्यापक सिद्धान्तों का प्रतिपादन करता है। इसलिए तर्कशास्त्र द्वारा प्राप्त ज्ञान व्यापक होता है। तर्कशास्त्र निश्चित और यथार्थ ज्ञान देता है। यह ज्ञान सुव्यवस्थित होता है। इसमें हमें पद, वाक्य, अनुमान आदि के स्वरूप का ज्ञान होता है। अतः तर्कशास्त्र विज्ञान है।

कला

किसी निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जो नियम होते हैं उन्हें ही कला कहा जाता है। हर कला का कोई निश्चित लक्ष्य होता है और उसकी पूर्ति के लिए उसमें नियम बनाये जाते हैं।

तर्कशास्त्र का भी एक ध्येय है - अनुमान में सत्यता की प्राप्ति। इस लक्ष्य की पूर्ति के

लिए इसमें सही अनुमान के नियम बताये जाते हैं। अतः तर्कशास्त्र भी एक कला है।

कुछ तर्कशास्त्री विज्ञान और कला में विरोध बतलाते हैं। उन्होंने बतलाया है कि विज्ञान सैद्धान्तिक है, कला व्यावहारिक। वास्तव में विज्ञान और कला का विरोध वास्तविक नहीं है। किसी भी कला को विधियुक्त होने के लिए विज्ञान पर आश्रित रहना पड़ता है। आज ऐसी कोई भी कला नहीं, जिसके सिद्धान्तों का अध्ययन किसी विज्ञान का विषय नहीं। अतः तर्कशास्त्र को विज्ञान और कला दोनों कहा जा सकता है।

तर्कशास्त्र आदर्शवादी विज्ञान है यह सैद्धान्तिक होते हुए भी व्यावहारिक है।

तर्कशास्त्र का क्षेत्र

तर्कशास्त्र के क्षेत्र का अर्थ है कि यह किन किन विषयों का अध्ययन करता है अर्थात उसका वस्तु - विषय।

तर्क का मुख्य विषय अनुमान है। अनुमान के व्यापक ~~नियमों~~ सिद्धान्तों का अध्ययन ही इसका मुख्य लक्ष्य है। अनुमान के भी दो प्रकार होते हैं, निगमनात्मक और आगमनात्मक। तर्कशास्त्र का संबंध दोनों से है।

अनुमान वाक्यों से बने हुए होते हैं। जैसे - सभी ग्रहों में गति है। अतः तर्कशास्त्र में पदों और वाक्यों का अध्ययन किया जाता है।

अनुमान में ~~[illegible]~~ सहायक प्रक्रियाएँ हैं —

1) परिभाषा, वर्गीकरण तथा विभाग — इसके द्वारा पदों का ठीक अर्थ निश्चित किया जाता है।

2) निरीक्षण और प्रयोग इसके द्वारा आगमनात्मक अनुमान के आधार वाक्य प्राप्त होते हैं और निष्कर्ष की सत्यता की जाँच की जाती है।

3) व्याख्या, नामकरण, परक्रम भी तर्कशास्त्र के विषय हैं।

तर्कशास्त्र का संबंध विचार, वस्तु से है। इसका संबंध आकारिक सत्यता से है और वास्तविक सत्यता से भी। और भाषा ही हमारे विचारों को व्यक्त करती है। अतः यह विचार, वस्तु और भाषा तीनों से संबंधित

तर्कशास्त्र विज्ञान और कला दोनों ही है। यह अनुमान और उससे संबन्धित प्रक्रियाओं का इनके द्वारा सत्यता की प्राप्ति के लिए अध्ययन करता है। अतः तर्कशास्त्र विज्ञान है। यह इनमें सत्यता की प्राप्ति के ध्येय से उनके नियमों का अध्ययन करता है, अतः यह कला भी है।

तर्कशास्त्र के लाभ

→ यह वैध अनुमान के नियमों का विज्ञान है। यह कष्टमय जीवन और बाधाओं से पूर्ण विश्व में सुरक्षित रखता है। अतः तर्कशास्त्र हमें उस विषय का ज्ञान देता है, जिससे मनुष्य अपने को सुरक्षित रखता है और विकास की योजनाएँ बनाता है।

पद Term

तर्कशास्त्र का विषय 'अनुमान' है। अनुमान में जिन वाक्यों का व्यवहार होता है, वे तार्किक वाक्य कहे जाते हैं।

तार्किकवाक्य — सभी तेज विद्यार्थी Logic में पास कर गए हैं।

इस तार्किक वाक्य के तीन अंग हैं - उद्देश्य, विधेय और संयोजक। Copula

उद्देश्य वह है जिसके बारे में कुछ कहा जाता है उपर्युक्त तार्किक वाक्य में 'सभी विद्यार्थी' उद्देश्य है, क्योंकि उन्हीं के बारे में कुछ कहा जाता है।

विधेय वह है, जो उद्देश्य के बारे में कहा जाता है 'लॉजिक में पास कर गए हैं।' यह उद्देश्य के विषय में बताया गया है अतः यही विधेय है।

उद्देश्य और विधेय में सम्बन्ध स्थापित करने वाला शब्द संयोजक कहा जाता है।

'है' संयोजक है।

तार्किक वाक्य के उद्देश्य और विधेय को पद कहते हैं। उद्देश्य और विधेय एक शब्द का हो सकता है या अनेक शब्दों का भी। जैसे - The Principal of this college is a good man.

Some girls students are very intelligent.

पदों की वस्तुवाचकता और स्वभाववाचकता (Denotation और Connotation)

प्रत्येक पद किसी पदार्थ के लिए व्यवहृत होता है। पदों से उन सभी व्यक्तियों का बोध होता है जो उन नामों से जाने जाते हैं। उन्हें ही उन पद की वस्तुवाचकता कहा जाता है अर्थात् वे सभी पदार्थ, जिनका किसी पद से संकेत मिलता है, उस पद की वस्तुवाचकता है। संसार के जितने मनुष्य हैं - मानव वर्ग - 'मनुष्य' पद की वस्तुवाचकता के अंदर है, क्योंकि उन्हें 'मनुष्य' कहा जाता है। सभी कलम 'कलम' पद की वस्तुवाचकता के अंतर्गत है सभी घोड़े, 'घोड़ा' पद की वस्तुवाचकता के अंतर्गत हैं।

किसी पद की वस्तुवाचकता को उस पद का विस्तार, परिधि या क्षेत्र भी कहा जाता है।

किसी पद से उन गुणों या धर्मों का भी बोध होता है जिनके कारण वे पदार्थ उन नामों से जाने जाते हैं। उन धर्मों को स्वभाववाचकता कहा जाता है, अर्थात् किसी पद से जितने व्यक्तियों का बोध होता है उनके जो सामान्य और आवश्यक धर्म हैं, उन्हें ही उस पद की स्वभाववाचकता कहा जाता है। 'मनुष्य' पद की स्वभाववाचकता (विवेकशीलता) और 'प्राणित्व' है क्योंकि ये गुण ही सभी मनुष्य कहे जाने वाले व्यक्तियों के सामान्य और आवश्यक है और इन्हीं के कारण वे इस नाम से जाने जाते हैं। 'पक्षी' पद की स्वभाववाचकता 'पंखवाला' होता है। किसी पद की स्वभाववाचकता को उस पद की गहनता, सामर्थ्य और भाव भी कहा जाता है।

P.

स्वभाववाचकता (गुणार्थ) के प्रकार

1/ आत्मगत स्वभाव (Subjective) — प्रयोग करने वाले व्यक्ति पर निर्भर स्वभाव पद को प्रयोग करने वाले व्यक्ति पर निर्भर होता है यह व्यक्ति-व्यक्ति में बदलता रहता है यह तार्किक होने के स्थान पर मनोवैज्ञानिक है उदा. के लिए डाकू पद कभी वीरता के अर्थ में तो कभी बुरे व्यक्ति के अर्थ में प्रयोग किया जाता रहा है

2/ पारम्परिक स्वभाव Traditional — इसमें पद के अनिवार्य लक्षण शामिल होते हैं। उदा. के लिए मानव पद की व्याख्या विवेकशील प्राणी के रूप में की गई है विवेक मानव का अनिवार्य गुण है परम्परा के कारण अधिकतर व्यक्ति इस अर्थ को स्वीकार करते हैं। यह आत्मगत या मनोवैज्ञानिक न होकर वस्तुगत और ऐतिहासिक होता है

3/ वस्तुगत गुणार्थ (objective) — पद में वे सभी लक्षण शामिल होते हैं जो किसी वस्तु में किसी वर्ग का सदस्य होने के कारण पाये जाते हैं ये लक्षण ज्ञात अथवा अज्ञात हो सकते हैं उदा. के लिए यूक्लिड के एक त्रिभुज का वस्तुगत गुणार्थ एक ऐसा आकार है, जिसमें तीन कोण होते हैं अथवा जिसके तीनों कोणों का योग दो समकोणों के बराबर होता है

व्याप्त्यर्थ और गुणार्थ का संबंध विपरीत

व्याप्त्यर्थ और गुणार्थ में ~~अ~~ ~~[illegible]~~ परिवर्तन होता है इस संबंध से निम्नलिखित चार प्रकार के संबंध स्पष्ट होते हैं —

स्वभाववाचकता

1. यदि व्याप्त्यर्थ बढ़ता है तो गुणार्थ कम होता है

इसको स्पष्ट करने के लिए मनुष्य और जीवधारी दो पद लीजिये। जीवधारी पद व्याप्त्यर्थ मनुष्य से अधिक है इसलिए उसका गुणार्थ मनुष्य से कम है। केवल जीवनयुक्त होने से ही किसी को भी जीवधारी कहा जा सकता है किन्तु मनुष्य

कहलाने के लिए केवल जीवनयुक्त होना मात्र काफी नहीं है बल्कि उसके साथ विवेकशीलता भी होनी चाहिये। इस प्रकार स्पष्ट है कि व्याप्त्यर्थ बढ़ने से गुणार्थ कम हो जाता है। उपरोक्त उदा. में मनुष्य के गुणों में से विवेकशीलता निकाल देने से जो केवल प्राणित्व बचता है वह गुण जीवधारी का गुण है।

(2) यदि व्याप्त्यर्थ घटता है तो गुणार्थ बढ़ता है।

उपरोक्त उदा. में यदि मनुष्य पद का व्याप्त्यर्थ कम कर दिया जाये अर्थात् असभ्य मनुष्यों को मनुष्य न माना जाये और केवल सभ्य मनुष्यों को ही मनुष्य माना जाये तो मनुष्य पद का गुणार्थ बढ़ जायेगा क्योंकि उसमें मनुष्य के स्वभाव के साथ-साथ सभ्य होने का गुण और लगाना पड़ेगा। इस प्रकार व्याप्त्यर्थ घटने से गुणार्थ बढ़ता है।

3/ यदि गुणार्थ बढ़ता है तो व्याप्त्यर्थ कम होता है।

यदि हम मनुष्य के आवश्यक गुण विवेकशीलता के साथ ईमानदारी और लगा दें तो कम लोग मनुष्य पद के अधिकारी होंगे। इसी तरह यदि इसके साथ सभ्यता के गुण को जोड़ दिया जाये तो और भी कम लोग मनुष्य पद के अधिकारी होंगे क्योंकि ईमानदार असभ्य व्यक्ति भी मनुष्य की सीमा से निकल जायेंगे। इस प्रकार स्पष्ट है कि ज्यों-ज्यों किसी पद का गुणार्थ बढ़ता है त्यों-त्यों व्याप्त्यर्थ कम होता जाता है।

4/ यदि गुणार्थ घटता है तो व्याप्त्यर्थ बढ़ता है।

अब यदि मनुष्य कहलाने के लिए विवेकशीलता को भी हटा दिया जाये और गुणार्थ को कम करके केवल प्राणित्व को मनुष्य पद का अभिप्राय माना जाये तो ऐसी स्थिति में अन्य पशु भी मनुष्य पद के अधिकारी हो जायेंगे और मनुष्य पद का व्याप्त्यर्थ बढ़ जायेगा। इस प्रकार स्पष्ट है कि गुणार्थ घटने से व्याप्त्यर्थ बढ़ता है।

P

व्याप्त्यर्थ और गुणार्थ के विलोम संबंध के विषय में नियम →

1. वस्तुवाचकता अथवा स्वभाववाचकता को घटाने बढ़ाने से पद बदला जाता है —
जब किसी पद के स्वभाव, अथवा वस्तुवा. को घटाया बढ़ाया जाता है तो वह पद वही न रहकर दूसरा पद बन जाता है। उदा. के लिए, यदि मनुष्य पद के स्वभावा. में ईमानदारी या सभ्यता, बढ़ाई जाती है तो केवल मनुष्य न रहकर ईमानदार मनुष्य अथवा सभ्य मनुष्य का प्रयोग करना आवश्यक होगा और ये नए पद हैं।
इसी तरह यदि मनुष्य के स्वभावा. प्राणित्व और विवेकशीलता में से विवेकशीलता को निकाल दिया जाये अथवा उसके स्वभावा. को कम कर दिया जाए तो इस प्रकार वस्तुवा. को बढ़ा दिया जाए तो मनुष्य पद के स्थान पर पशु पद का प्रयोग करना पड़ेगा।

2. स्वभाववाचकता और वस्तुवाचकता के घटने बढ़ने का नियम तभी लागू होता है जबकि उसमें एक नया पद बन जाए —
नया पद तभी बनता है जबकि स्वभावा. में ऐसा कोई गुण जोड़ दिया जाए जो उस पद से निर्दिष्ट सभी वस्तुओं में सामान्य रूप से मिलता है। इसमें पद को बदलने की कोई जरूरत नहीं पड़ती।
उदा. के लिए मनुष्य का स्वभावा. विवेकशील प्राणी है। यदि विवेकशील प्राणी के साथ उसे दोपाया भी कहा जाए तो इससे मनुष्य समूह में किसी भी अन्य वर्ग के प्राणी सम्मिलित नहीं होते।

Date: / / Page no:

3) स्वभाव और वस्तुत्व के परिवर्तन से अनुपात या संख्या का परिवर्तन नहीं होता –

स्वभाव और वस्तुत्व के घटने बढ़ने से गणित के अनुसार कोई प्रतिलोम अनुपात नहीं होता। उदाहरण के लिये यदि मनुष्य पद के स्वभाव में काला गुण जोड़ दिया जाए तो उसके स्वभाव में भूमण्डल पर रहने वाले समस्त काले मनुष्य आ जाएँगे।

किन्तु दूसरी ओर यदि मनुष्य के स्वभाव में अंधापन गुण जोड़ दिया जाए तो इस पद का प्रयोग बहुत थोड़े से मनुष्यों के लिये होगा। इन दोनों उदाहरणों में ~~वस्तुवाचकता~~ ~~थोड़ी~~ स्वभाव बढ़ा है ~~घटता है~~ और वस्तुवाचकता घटा है।

किन्तु एक ही गुण के बढ़ने से 'काला मनुष्य' के उदाहरण में वस्तुत्व थोड़ा ही घटता है जबकि अंधे मनुष्य के स्वभाव में वस्तुवाचकता बहुत अधिक घट जाता है।

स्पष्ट है कि स्वभाववाचकता और वस्तुवाचकता में प्रतिलोम अनुपात तो होता है परन्तु इनके घटने बढ़ने से परिवर्तन गणित के नियमों के अनुसार नहीं होता।

4) वर्ग की संख्या बढ़ने घटने मात्र से स्वभाववाचकता नहीं बदलता –

यदि किसी पद से निर्दिष्ट वर्ग में वस्तुओं अथवा जीवधारियों की संख्या घट बढ़ जाए तो इससे स्वभावत्व में कोई अंतर नहीं आता। किसी समय यूरोप में भेड़ियों की संख्या बहुत अधिक थी, अब भेड़िया पद से निर्दिष्ट वर्ग में बहुत कम जीव रह गये हैं किन्तु इससे उसका स्वभावत्व नहीं बदला।

Date: / / Page no:

5. स्वभावता या वस्तुता के घटने बढ़ने से स्वभाव नहीं घटता बढ़ता।

किसी भी पद के वस्तुता या स्वभावता के घटने बढ़ने से उसके विषय में हमारे ज्ञान का बढ़ना आवश्यक नहीं है

उदाहरण के लिये जब कोलम्बस ने अमेरिका की खोज की तो महाद्वीप पद के बारे में हमारा ज्ञान बढ़ा परन्तु इससे महाद्वीप पद के वस्तुवाच्यता अथवा स्वभावता में कोई अंतर नहीं आया।